दौलत
में
ख़ुदा और बन्दों का
हक़

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी
अनुवादक
एस० ख़ालिद निज़ामी

विषय-सूची

दौलत में ख़ुदा और बन्दों का हक़

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, बड़ा रहमवाला है।"

दौलत में ख़ुदा और बन्दों का हक़

माल और दौलत अल्लाह तआला की देन है

माल और दौलत अल्लाह तआला की एक बहुत बड़ी नेमत और सरासर उसका फ़ज़्ल है। इसपर हर इनसान को उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए, लेकिन यह इंसान की नासमझी है कि इसे वह अपने इल्म, ताक़त और सलाहियत का नतीजा समझता है और अल्लाह के एहसान को भूल जाता है। हालाँकि उसको सोचने-समझने और अमल की जो सलाहियतें मिली हैं और दौड़-धूप और कोशिशों के जो मौक़े और आसानियाँ हासिल हैं, वे सब-की-सब अल्लाह ही की दी हुई हैं। उसकी मदद और मेहरबानी अगर न हो तो कोई भी चीज़ इनसान अपनी ताक़त या सलाहियत से हासिल नहीं कर सकता। क़ुरआन मजीद में इनसान की नाशुक्री का ज़िक्र एक जगह इस तरह किया गया है—

> "जब इनसान को तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से नेमत देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे (अपने) इल्म और क़ाबिलियत की वजह से मिली है। हक़ीक़त यह है कि इसमें उसकी आज़माइश और इम्तिहान है, लेकिन इनमें से ज़्यादातर नहीं जानते।"
>
> (क़ुरआन, 39 : 49)

दौलत पर अल्लाह का शुक्र अदा करना ज़रूरी है

क़ुरआन मजीद ने इस ग़लत सोच पर सावधान किया और कहा कि जिन लोगों को अल्लाह ने माल और दौलत दी है वे नाशुक्री का रवैया

छोड़ दें और अल्लाह के शुक्रगुज़ार बनें। अल्लाह की नेमतों का इक़रार एक हक़ीक़त का इक़रार है, और जो आदमी हक़ीक़त को झुठलाता है, वह किसी दूसरे का नहीं, ख़ुद अपना ही नुक़सान करता है। उसने मक्का के मुशरिकों से कहा कि ख़ुद काबा की वजह से अरब के रेगिस्तान में उन्हें जो तिजारती और आर्थिक फ़ायदे हासिल हैं इसपर उन्हें अल्लाह के सामने इबादत के लिए झुक जाना और शुक्र के तौर पर सज्दे में गिर जाना चाहिए। लेकिन उनमें से ज़्यादातर इस एहसास ही से महरूम (वंचित) थे (कि यह भी अल्लाह की मेहरबानी है)।

> "क्या यह सच नहीं है कि हमने एक अमनवाले (शान्तिपूर्ण) 'हरम' (काबा) को उनके क़ियाम की जगह (निवास-स्थान) बनाया जहाँ हर तरफ़ से समरात (फल) खिंचे चले आते हैं। हमारी तरफ़ से रोज़ी के तौर पर। मगर उनमें से ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं।" (क़ुरआन, 28 : 57)

काबा की वजह से क़ुरैश को जो व्यापारिक आसानियाँ मिली हुई थीं, क़ुरआन की सूरा क़ुरैश में साफ़ तौर से उनकी चर्चा करने के बाद कहा गया कि इसका लाज़िमी तक़ाज़ा है कि वे काबा के रब ही की इबादत करें और उसकी नाफ़रमानी का रास्ता न अपनाएँ।

> "क़ुरैश के आदी हो जाने यानी उनके जाड़े और गरमी में (तिजारती) सफ़र के आदी हो जाने की वजह से उनको उस घर (काबा) के रब क़ी बन्दगी करनी चाहिए, जिसने उनको भूख से बचाया और खाने को दिया और (दुशमनों के) भय से बचाए रखा।" (क़ुरआन, 106 : 1-4)

मक्का में मुसलमान डर और बेइत्मीनानी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और आर्थिक तौर पर परेशान हाल थे। मदीना में उन्हें अम्न व सुकून और आर्थिक ख़ुशहाली नसीब हुई। क़ुरआन ने इस एहसान का ज़िक्र किया और अल्लाह का शुक्र अदा करने का हुक्म दिया—

"वह वक़्त याद करो जबकि तुम थोड़े से थे, ज़मीन में कमज़ोर समझे जा रहे थे, डरते रहते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें एक ठिकाना दिया, अपनी मदद से तुम्हें ताक़त दी और खाने के लिए साफ़-सुथरी चीज़ें अता (प्रदान) कीं ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो।" (क़ुरआन, 8 : 26)

नेमत का इक़रार शुक्र है

शुक्र अदा करने से नेमत में बढ़ोत्तरी होती है और नाशुक्री उसके छिन जाने की वजह बनती है। माल और दौलत का शुक्र दो तरह से अदा होता है। एक यह कि इनसान इस हक़ीक़त को माने कि उसे जो कुछ मिला है वह अल्लाह की तरफ़ से मिला है और फिर अपनी पूरी ज़िन्दगी में एहसानमन्द होने का रवैया अपनाए। यही उसके लिए सबसे अच्छा रवैया है और इसी में उसकी कामयाबी है। उसे छोड़कर इनसान जब बग़ावत और सरकशी का रवैया अपनाता है तो मानो अपने लिए उस बुरे अंजाम को पसन्द करता है जो इस दुनिया में हमेशा ख़ुदा के बाग़ियों का होता रहा है।

बन्दों का हक़ स्वीकार किया जाए

माल और दौलत पर शुक्र अदा करने की दूसरी शक्ल यह है कि इनसान ख़ुदा के बन्दों का हक़ भी स्वीकार करे और उसे अदा करने की कोशिश भी करे। इस हक़ को अदा करके वह अपनी अख़लाक़ी और क़ानूनी ज़िम्मेदारी ही पूरी नहीं करता, बल्कि अपनी धन-दौलत को बर्बादी से बचाता है और उसकी तरक़्क़ी का सामान करता है। जब कभी भी इनसान ने इस हक़ को अदा करने में लापरवाही और कोताही की है, उसकी तरक़्क़ी का रास्ता बन्द हो गया और उसके लिए अपनी धन-दौलत और पूँजी का बचाना भी मुशकिल हो गया।

इसकी वजह यह है कि इनसान जिस समाज में रहता है और जिसके संसाधनों और स्रोतों से फ़ायदा उठाकर तरक़्क़ी करता है, अगर

उसके हक़ों को न पहचाने तो बहुत जल्द उसकी मदद और हमदर्दी से वह महरूम (वंचित) हो जाता है। इनसान की आर्थिक तरक़्क़ी में उसकी जिद्दोजुहद, तदबीर और मेहनत के साथ दूसरों की कोशिशों का भी सीधे या छिपे रूप में दख़ल होता है। अगर वह इस हक़ीक़त को भुला बैठे और जिन लोगों की मदद और हमदर्दी से वह ऊपर उठा है, उनकी बुनियादी ज़रूरतों और जाइज़ मुतालबों तक को ठुकराकर आगे बढ़ना चाहे तो उनके अन्दर उसके खिलाफ़ ग़म, ग़ुस्सा और नफ़रत के जज़्बात का भड़क उठना बिलकुल फितरी (स्वभाविक) बात है। फिर एक वक़्त आता है जबकि वही लोग जिन्होंने उसे आगे बढ़ाया था उसे पीछे धकेल देना चाहते हैं। जहाँ उसका प्यार और मुहब्बत से स्वागत होता था वहाँ हर आदमी उसको नफ़रत और नीची नज़रों से देखने लगता है। यही चीज़ आख़िरकार उसके पतन और तबाही का कारण बन जाती है और वह जितना ऊपर उठा था उतना ही नीचे पहुँच जाता है।

इसके साथ यह भी एक सच्चाई है कि ख़ुदग़र्ज़ी और मफ़ादपरस्ती का रवैया इनसान को ख़ुदा की दया व कृपा से वंचित कर देता है। जो आदमी अपने मातहतों, कमज़ोरों और मोहताजों को भुलाकर ख़ूब ऐश करता फिरे, वह बहुत जल्द ख़ुदा के प्रकोप का निशाना बन जाता है। और जिस दौलत और ताक़त को पाकर वह ख़ुदा और उसके बन्दों के हक़ों को भूल गया था, वह कभी-कभी उससे छीन ली जाती है। क़ुरआन मजीद में इस बात को बहुत सारी मिसालों से समझाया गया है।

नाशुक्र लोगों का अंजाम

बनी-इसराईल एक ग़रीब, बदहाल, मज़लूम और मातहत क़ौम थी। इसी क़ौम में क़ारून भी था जिसके ख़ज़ानों की चाबियाँ इतनी थीं कि आदमियों के एक दल के लिए भी उठाना मुशकिल था। इस बेहिसाब दौलत को पाकर बजाय इसके कि वह अल्लाह का शुक्र अदा करता और लोगों का हक़ पहचानता, उसने ज़ुल्म और सितम का रास्ता अपनाया और धन-दौलत के घमण्ड में दूसरों को नीचा और तुच्छ समझने लगा। इसपर

उसको नसीहत की गई—

> "घमण्ड मत करो, इसलिए कि अल्लाह घमण्ड करनेवालों को पसन्द नहीं करता। जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उससे आख़िरत के घर का सामान कर लो, दुनिया में जो तुम्हारा हिस्सा है उसे मत भूलो, और लोगों के साथ उसी तरह एहसान करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ एहसान किया है, और ज़मीन में बिगाड़ (पैदा करने) की कोशिश न करो, निस्संदेह अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"
>
> (क़ुरआन, 28 : 76-77)

क़ारून ने इस क़ीमती नसीहत को ठुकरा दिया। उसने कहा—

> "यह सब कुछ तो मुझे अपने इल्म (ज्ञान) की वजह से मिला है।" (क़ुरआन, 28 : 78)

मतलब यह कि यह धन-दौलत और ख़ुशहाली मुझे किसी ने नहीं दी है, बल्कि यह मेरी अपनी कोशिशों और सलाहियतों का फल है। इसलिए इसमें कोई आदमी न तो अपने हक़ का दावा कर सकता है और न किसी की सेवा अनिवार्य है। हालाँकि यही वह ज़ेहन और मिज़ाज है जो इनसान की तबाही की वजह बनता है। क़ुरआन में है—

> "क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह तआला उससे पहले बहुत-सी उन क़ौमों को तबाह कर चुका है जो उससे ज़्यादा ताक़तवर थीं और जिनके पास उससे ज़्यादा दौलत थी। मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाता।"
>
> (क़ुरआन, 28 : 78)

मतलब यह है कि क़ारून दौलत के नशे में मस्त था। उसने इस हक़ीक़त से आँखें बन्द कर ली थीं कि दुनिया में उससे ज़्यादा ताक़तवर और माल-दौलतवाले भी पैदा हुए हैं, लेकिन जब उन्होंने अल्लाह और बन्दों के हक़ों को नहीं पहचाना तो क़ुदरत के क़ानून ने उनको कोई छूट नहीं दी और वे तबाह-बर्बाद कर दिए गए।

क़ारून की शान और शौकत का वह आलम था कि बहुत-से नादान हसरत से उसे देखते और उसकी क़िस्मत पर रश्क करते थे, लेकिन जो लोग समझदार और दूरअन्देश थे वे जानते थे कि जो इनसान अल्लाह को भूल चुका है और बन्दों के हक़ों को पैरों तले रौंद रहा है उसकी तबाही व बर्बादी यक़ीनी है। उसे तबाही और बर्बादी से कोई चीज़ बचा नहीं सकती। फिर यही हुआ कि क़ारून अपने महल के साथ ज़मीन में धँसा दिया गया। न तो कहीं उसको पनाह मिली और न ही वह अपने को बचा सका। इस तरह उसकी सारी शानो-शौकत दुनिया के लिए इबरत (शिक्षा) बन गई और उसके अंजाम पर दो आँसू बहानेवाला भी कोई न रहा।

(क़ुरआन, 28 : 79-82)

क़ुरआन की सूरा-18 कह्फ़ में दो आदमियों की मिसाल दी गई है। एक के पास अंगूर के दो बेहतरीन बाग़ थे। उन बाग़ों के चारों तरफ़ खजूर के पेड़ थे, खेती-बाड़ी थी, सिंचाई के लिए नहर थी जिसकी वजह से पैदावार बहुत अच्छी हो रही थी और उसकी ख़ुशहाली में बढ़ोत्तरी हो रही थी। लेकिन धन-दौलत ने उसके अन्दर शुक्र के जज़्बे की जगह ग़ुरूर और घमण्ड पैदा कर दिया। उसने अपने साथी को कमतर समझते हुए उससे कहा—

> "मैं तुझसे ज़्यादा माल रखता हूँ और तुझसे ज़्यादा ताक़तवर लोग मेरे साथ हैं।" (क़ुरआन, 18 : 34)

धन-दौलत को पाने के बाद जिस तरह एक दुनियादार आदमी यह समझ बैठता है कि उसका आराम व चैन कभी न ख़त्म होनेवाला है, उसी तरह उसने यह भी सोचा कि उसे हमेशा रहनेवाला सुख मिल गया है और उसकी ख़ुशहाली कभी ख़त्म न होगी। जब उससे कहा गया कि यह दुनिया ही सब कुछ नहीं है, यह तो एक दिन ख़त्म हो जानेवाली है। इसके बाद आख़िरत है, जहाँ उसे अपने कर्मों का हिसाब देना होगा; तो उसने कहा कि आख़िरत की कल्पना मुझे क़बूल नहीं, मैं उसे नहीं मानता। अगर क़ियामत आ भी जाए तो मेरा अंजाम अच्छा ही होगा। जो आज ख़ुशक़िस्मत है वह

कल बदनसीब नहीं हो सकता। उसके साथी ने उसे समझाया कि तुम ख़ुदा का इनकार किसी तरह नहीं कर सकते, इसलिए कि तुम्हारा अपना वुजूद ही उसकी गवाही दे रहा है। तुम कुछ नहीं थे, ख़ुदा ने तुम्हें इनसान बनाया। तुम्हें जो धन-दौलत मिली है उसी की तरफ़ से मिली है, इसपर तुम्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए। लेकिन उसने यह रास्ता नहीं अपनाया और आख़िरकार उसका अंजाम वही हुआ जो नशुक्रे इनसानों और क़ौम का होता है। क़ुरआन ने उसकी बर्बादी का नक़्शा इस तरह खींचा है—

> "उसकी सारी फ़सल बर्बाद (नष्ट) हो गई और अपने बाग़ को उल्टा पड़ा हुआ देखकर अपनी लगाई हुई लागत पर हाथ मलता रह गया और कहने लगा कि काश! मैंने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया होता। कोई गरोह उसका ऐसा न था जो उसकी मदद करता और न ख़ुद ही उसमें बदला लेने की ताक़त थी। उस वक़्त मालूम हो गया कि सारा इक़तिदार (बादशाही) अल्लाह ही के हाथ में है, उसी के पास अच्छा बदला है और वह अच्छे अंजाम तक पहुँचाता है।" (क़ुरआन, 18 : 42-44)

सूरा-68 अल-क़लम में इसी तरह का एक और वाक़िआ बयान हुआ है। यह वाक़िआ बाग़वालों का है। जब उनके बाग़ की फ़सल तैयार हो गई तो उन्होंने यह फ़ैसला किया कि बिलकुल सुबह-सवेरे और लोगों के जागने से पहले ही फ़सल काट लें, ताकि किसी मोहताज और मिसकीन (ग़रीब) को पता न चले और वह अपनी ख़ाली झोली लेकर न आ जाए। अल्लाह तआला को उनकी यह संग-दिली और बेरहमी इतनी नापसन्द हुई कि रातों-रात उनकी सारी फ़सल बर्बाद हो गई और वे हाथ मलकर रह गए। वे ग़रीबों का हक़ मारना चाहते थे लेकिन अपने हक़ से भी महरूम हो गए, लेकिन उनका ज़मीर (अन्तरात्मा) अभी मरा नहीं था। उनके अन्दर इनसानियत, मुहब्बत और हमदर्दी अभी बाक़ी थी। चुनांचे उन्हीं में से एक नेक और परहेज़गार आदमी ने उनको उनकी इस ग़लती की तरफ़ तवज्जोह दिलाई तो उन्हें अपनी ग़लती का बहुत एहसास हुआ और वे अल्लाह से

माफ़ी माँगने लगे। यह क़िस्सा बयान करने के बाद क़ुरआन ने कहा है—

"यह है अज़ाब, और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है। काश ये इस बात को जानते!" (क़ुरआन, 68 : 33)

हदीसों में भी साफ़ तौर पर यह कहा गया है कि नेमत के मिलने के बाद अल्लाह का शुक्र वाजिब (अनिवार्य) है। शुक्र अदा न किया जाए तो नेमत छिन जाती है। अल्लाह तआला जब किसी को माल और दौलत देता है तो उसमें बेशुमार इनसानों के हुक़ूक़ रख देता है। फिर वह यह देखता है कि उनके हुक़ूक़ अदा किए जाते हैं या नहीं? अगर इनसान ख़ुशदिली से इन हक़ों को अदा करे तो दौलत बाक़ी रहती है और बढ़ती जाती है। इसके बरख़िलाफ़ जब वह इन हक़ों को अदा करने में क़ोताही करने लगता है तो दौलत को घुन लग जाता है और वह देर-सवेर ख़त्म हो जाती है। हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-अब्बास (रज़ि॰) रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"जिस बन्दे को अल्लाह तआला पूरी तरह नेमत से नवाज़े और फिर लोगों की ज़रूरतें उससे जोड़ दे (तो ज़रूर उसे उन ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए)। अगर उसके अन्दर इससे उकताहट और (दिल में) तंगी पैदा हो जाए तो वह अपनी नेमत को बर्बादी का निशाना बनाता है।" (हदीस : तबरानी)

हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-उमर (रज़ि॰) की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"अल्लाह तआला कुछ लोगों को ख़ास तौर पर नेमतें अता करता है ताकि बन्दों को फ़ायदा पहुँचाए। उन नेमतों और राहतों में वह उनको उस वक़्त तक बाक़ी रखता है जब तक कि वे ख़ुदा के बन्दों पर उसकी ये नेमतें ख़र्च करते हैं। जब वे उससे हाथ रोक लेते हैं तो उनको दूसरों के पास पहुँचा देता है।"

(हदीस : तबरानी)

हदीसों में वाक़िओं की मदद से भी यह बात समझाने की कोशिश

की गई है कि माल और दौलत मिलने पर शुक्र अदा करना ज़रूरी है। शुक्र अदा करने से नेमत में बढ़ोत्तरी होती है और नाशुक्री नेमत के ख़त्म होने की वजह बनती है।

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि बनी-इसराईल में तीन मजबूर और लाचार इनसान थे— एक बर्स (सफ़ेद कोढ़) वाला, दूसरा गंजा और तीसरा अन्धा। अल्लाह तआला ने उन्हें मुसीबत के बाद आराम देकर आज़माना चाहा तो उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा। फ़रिश्ता सबसे पहले कोढ़वाले के पास गया और मालूम किया कि तुम्हें सबसे ज़्यादा कौन-सी चीज़ पसन्द है? उसने जवाब दिया, मेरी सबसे बड़ी ख़ाहिश यह है कि यह बीमारी, जिसकी वजह से लोग मुझसे नफ़रत और घिन महसूस करते हैं, ख़त्म हो जाए, जिस्म के धब्बे दूर हो जाएँ और अच्छी रंगत मिल जाए। फ़रिश्ते ने उसके जिस्म पर हाथ फेरा तो उसका मर्ज़ ख़त्म हो गया और उसे ख़ूबसूरती मिल गई। उसके बाद फ़रिश्ते ने उससे पूछा कि तुम्हें किस क़िस्म की दौलत सबसे ज़्यादा पसन्द है? उसने ऊँट या गाय का नाम लिया और उसे गाभिन ऊँटनी या गाय, जो उसने चाहा, मिल गई। फ़रिश्ते ने अल्लाह से माल में बरकत की दुआ की और चला गया।

फिर वह फ़रिश्ता गंजे के पास गया और उसकी ख़ाहिश मालूम की। उसने कहा, मेरी सबसे बड़ी तमन्ना यह है कि यह गंजापन दूर हो जाए और अच्छे बाल मिल जाएँ। फ़रिश्ते ने उसके सर पर हाथ फेरा तो उसका गंजापन दूर हो गया और ख़ूबसूरत बाल निकल आए। फ़रिश्ते ने उससे पूछा कि वह किस तरह की दौलत चाहता है? उसने गाय या ऊँट कहा और वह उसे मिल गई। फ़रिश्ते ने उसके लिए भी अल्लाह से माल में बरकत की दुआ की और चला गया।

इसके बाद अब वही फ़रिश्ता अंधे के पास आया और उसकी सबसे बड़ी ख़ाहिश मालूम की। उसने जवाब दिया कि मेरी सबसे बड़ी आरज़ू यह है कि अल्लाह तआला मुझे दोबारा आँखों की रौशनी अता (प्रदान) कर दे ताकि मैं फिर से दुनिया देख सकूँ। फ़रिश्ते ने चेहरे पर हाथ

फेरा तो उसकी आँखों की रौशनी वापस आ गई और वह फिर से देखने लगा। फ़रिश्ते ने उससे भी पूछा कि तुम्हें किस तरह की दौलत चाहिए। उसने बकरी कहा। चुनांचे उसे भी एक गाभिन बकरी मिल गई। फ़रिश्ते ने उसके लिए भी अल्लाह से भलाई और बरकत की दुआ की और चला गया।

ज़माना गुज़रा और उन जानवरों की नस्लें ख़ूब फैलीं। उन तीनों में एक ऊँटों के रेवड़ का, दूसरा गायों के रेवड़ का और तीसरा बकरियों के रेवड़ का मालिक हो गया। अब अल्लाह तआला ने उनकी इस दौलत का इम्तिहान लेना चाहा। इसलिए वही फ़रिश्ता एक मुसाफ़िर की शक्ल में कोढ़वाले के पास गया और कहा कि मैं एक ग़रीब और ज़रूरतमन्द आदमी हूँ, रास्ते की मुशकिलों में घिर गया हूँ। मेरे पास जो कुछ था सब ख़त्म हो चुका है। अब अल्लाह की मदद और तुम्हारे सहयोग ही से मंज़िल तक पहुँच सकता हूँ। उस ख़ुदा का वास्ता देकर तुमसे एक ऊँट माँग रहा हूँ जिसने तुम्हें सेहत और तन्दुरुस्ती दी और यह दौलत प्रदान की। उसने जवाब दिया कि मेरे ऊपर बहुत-से हुक़ूक़ और ज़िम्मेदारियाँ हैं जिन्हें मुझे अदा करने हैं, इसलिए मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। फ़रिश्ते ने उससे कहा, मुझे याद आता है कि मैंने पहले भी तुम्हें देखा है। क्या ऐसा नहीं कि तुम कोढ़ में मुब्तला थे, अल्लाह ने तुम्हें उससे नजात दी और तुम फ़क़ीर थे, अल्लाह ने तुम्हें दौलत दी? जब हक़ीक़त यह है तो तुम्हें उसका शुक्र अदा करना चाहिए। उसने जवाब दिया, तुम ग़लत कहते हो, यह दौलत मुझे अपने बाप-दादा से मिली है। फ़रिश्ते ने बद-दुआ की कि अगर तुम झूठ बोल रहे हो तो ख़ुदा तुम्हें उसी हालत में लौटा दे जिसमें तुम पहले पड़े हुए थे। फिर वह गंजे के पास गया और उससे भी यही दरख़ास्त की। उसका जवाब भी कोढ़वाले के जवाब ही की तरह था। फ़रिश्ते ने उसे भी बद-दुआ दी और चला गया। आख़िर में वह अंधे के पास गया। जब उसे उसकी पिछली हालत याद दिलाई तो उसने क़बूल किया कि हाँ, बिलकुल सही, मैं अन्धा था! अल्लाह ने मुझे देखने की ताक़त दी और मुझे दौलत से मालामाल किया। बकरियों का यह रेवड़ मौजूद है, तुम्हें जितनी

बकरियों की ज़रूरत है इसमें से ले लो। मेरी तरफ़ से पूरी इजाज़त है। फ़रिश्ते ने कहा, मुझे तेरे माल की ज़रूरत नहीं। अस्ल में अल्लाह तआला ने इस तरह से तुम लोगों को आज़माया था। तुम तो इस आज़माइश में पूरे उतरे, लेकिन तुम्हारे दोनों साथी नाकाम हुए। अल्लाह तुमसे ख़ुश है और उनसे नाख़ुश।" (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

एक और हदीस में है कि–

"अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि एक आदमी मैदान से गुज़र रहा था। उसने ग़ैब से आवाज़ सुनी कि ऊपर बादल को हुक्म दिया जा रहा है कि फ़ुलाँ आदमी के बाग़ को सैराब कर दो। चुनांचे बादल एक ख़ास दिशा में बढ़ने लगा और कुछ दूर एक पथरीली ज़मीन पर बरस पड़ा। फिर एक छोटे-से नाले में यह पानी बहने लगा। यह आदमी जो इस हैरतअंगेज़ वाक़िए को अपनी आँखों से देख रहा था, नाले के साथ-साथ चलने लगा। उसने देखा कि नाला एक बाग़ में पहुँच रहा है और वहाँ एक आदमी अपने बाग़ को पानी दे रहा है। इसने उसका नाम पूछा तो बाग़वाले ने अपना वही नाम बताया जो उसने ऊपर सुना था। बाग़वाले ने उससे कहा, "ऐ ख़ुदा के बन्दे! यह तो बताओ कि तुमने मेरा नाम क्यों पूछा?" इसने पूरा वाक़िआ उसे सुनाया और मालूम किया कि वह अपने बाग़ में किन बातों का ख़याल रखता है जिसकी वजह से अल्लाह ने ख़ास तौर पर उसके बाग़ को सैराब करने का हुक्म दिया। उसने जवाब दिया कि इस बाग़ से जो पैदावार होती है उसके मैं तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा मैं ख़ुदा की राह में ख़र्च करता हूँ, दूसरे से अपनी और अपने बच्चों की ज़रूरतें पूरी करता हूँ और तीसरा हिस्सा इस बाग़ की देख-भाल में ख़र्च करता हूँ।" (हदीस : मुस्लिम)

इस तरह के वाक़िआत के बारे में एक सवाल पैदा होता है कि क्या इनकी कोई तारीख़ी (ऐतिहासिक) हैसियत है या ये सिर्फ़ मिसालें हैं? लेकिन यह सवाल ज़्यादा अहम नहीं है। असल अहमियत उस बात की है जो इनमें बयान हुई है। सादा लफ़्ज़ों में वह बात यह है कि जिस आदमी को अल्लाह तआला माल और दौलत दे उसपर उसका शुक्र वाजिब

(अनिवार्य) हो जाता है। बेशक यह भी शुक्र है कि इनसान अपनी ज़बान से ख़ुदा के इनाम और उसके फ़ज़्ल और एहसान को माने। लेकिन इससे बड़ा और असली शुक्र यह है कि उसे ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करे और उसमें बन्दों के जो हक़ हैं उन्हें अदा करे।

नाशुक्री करनेवाली क़ौमें तबाह हो जाती हैं

लोगों की तरह क़ौमें भी जब नाशुक्री करने लगती हैं तो तबाह-बर्बाद हो जाती हैं और उनकी शानो-शौकत और ताक़त व दबदबा मिट्टी में मिल जाता है। क़ुरआन मजीद से मालूम होता है कि जब कोई क़ौम ख़ुदा की नेमतों को पाकर उसे भूल जाती है और उसका यह एहसास ख़त्म हो जाता है कि जिस ख़ुदा ने उसे सब कुछ दिया है उसे उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए, तो वह ख़ुदा की बन्दगी और फ़रमाँबरदारी से मुँह मोड़ लेती है और उसके अज़ाब और पकड़ से बेख़ौफ़ होकर ज़िन्दगी गुज़ारने लगती है। उसके हाथों ख़ुदा के हक़ों के साथ उसके बन्दों के हक़ भी ख़त्म होने लगते हैं।

ख़ुदा की नाफ़रमानी करने और बन्दों के हक़ मारने में बहुत गहरा ताल्लुक़ है। जो क़ौम ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ हो उसके अन्दर सही मानी में उसके बन्दों से हमदर्दी का जज़्बा भी ख़त्म होने लगता है। जब ख़ुदा के हक़ों को अदा न करने की उसमें हिम्मत पैदा हो जाती है तो उसे बन्दों के हक़ों को पैरों तले रौंदने में भी कोई डर नहीं लगता। ख़ुदा को भूलने के बाद बन्दों को भूल जाना आसान होता है। ख़ुदा को भूलनेवाली व ख़ुदा से बेपरवाह किसी क़ौम से इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह इनसानों के साथ अदल व इंसाफ़, मुहब्बत व हमदर्दी, हुस्ने-सुलूक (अच्छे व्यवहार) और एहसान का बेहतरीन और शरीफ़ाना रवैया अपनाएगी। तारीख़ (इतिहास) बताती है कि जब भी किसी क़ौम ने ख़ुदा से बग़ावत की तो उसके अन्दर ख़ुदग़र्ज़ी, ज़ुल्म और ज़्यादती पनपने लगी। उसके ताक़तवर उसके कमज़ोरों को लूटने लगे, उसके मालदारों ने अपनी दौलत और माल में अल्लाह के किसी बन्दे का हक़ मानने से इनकार कर दिया और उसके ख़ुशहाल और अमीर लोगों ने अपने सुख और आराम में किसी को शामिल करना पसन्द

नहीं किया। यही चीज़ आख़िरकार उनकी तबाही और बर्बादी की वजह बनी।

क़ुरआन मजीद में साफ़ तौर पर यह कहा गया है कि जिन क़ौमों को दुनिया की ख़ुशहाली मिली है उन्होंने बार-बार की याददिहानी और तंबीह के बाद भी नाशुक्री और नाफ़रमानी का रवैया नहीं छोड़ा और ऐश व आराम में पड़कर ख़ुदा की नाफ़रमानी और बग़ावत पर अड़ी रहीं, उनका सुख-चैन उनसे छीन लिया गया और वे तबाह कर दी गईं। एक जगह नेमत के इनकार के इस भयानक अंजाम से बाख़बर करने के बाद ख़ुदा को अपना मोहसिन (उपकार-कर्ता) और मालिक मानने और शुक्र का रवैया अपनाने की हिदायत इस तरह की गई है—

"अल्लाह तआला ने एक ऐसी बस्ती की मिसाल दी जो अपनी जगह अमन और चैन से थी। हर तरफ़ से रोज़ी उसके पास बड़ी कुशादगी के साथ आती थी, लेकिन जब उसने अल्लाह के एहसानों की नाशुक्री की तो उसने भूख और डर-ख़ौफ़ का लिबास उसे पहना दिया, उन आमाल की वजह से जो कुछ वे करते थे। उनके पास उनकी क़ौम में से एक रसूल आया, लेकिन उन्होंने उसे झुठलाया। फिर उनको अज़ाब ने पकड़ लिया, इसलिए कि वे ज़ालिम थे। इसलिए ऐ लोगो, तुम खाओ जो कुछ हलाल और पाक रोज़ी अल्लाह ने तुम्हें दी है, और अल्लाह के एहसान का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करते हो।"
(क़ुरआन, 16 : 112-114)

एक दूसरी जगह फ़रमाया—

"कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हम तबाह कर चुके हैं जिनके लोग अपनी ख़ुशहाली पर इतराने लगे थे। ये उनके मक़ामात (निवास-स्थान) हैं जो उनके बाद कम ही आबाद हुए, और हम ही वारिस होकर रहे।" (क़ुरआन, 28 : 58)

इतिहास से मिसालें

बनी-इसराईल पर अल्लाह तआला ने बहुत-से एहसान किए। उनको हुकूमत दी दुनिया की बादशाहत अता की, माद्दी क़ुव्वत (भौतिक शक्ति) से नवाज़ा, खाने-पीने के लिए बेहतरीन चीज़ें अता कीं, और सबसे बड़ी बात यह कि उनमें नुबुव्वत और रिसालत का सिलसिला जारी किया। क़ुरआन मजीद में उन एहसानों का ज़िक्र इस तरह किया गया है–

> "हमने बनी-इसराईल को किताब, हुकूमत और नुबुव्वत अता की, खाने के लिए पाक चीज़ें दी, उन्हें दुनियावालों पर बड़ाई दी।"
>
> (क़ुरआन, 45 : 16)

उनसे कहा गया कि अल्लाह तआला ने तुम्हें फ़िरऔन के ज़ुल्मो-सितम से बचाया, तौरात जैसी मुक़द्दस किताब दी और बिना पानी और दाने के सीना की वादी में मन्नो-सल्वा उतारा। अल्लाह की नेमतों से ख़ूब फ़ायदा उठाओ, लेकिन बग़ावत और सरकशी न अपनाना, वरना ख़ुदा का ग़ुस्सा नाज़िल होगा और तुम तबाह कर दिए जाओगे–

> "जो पाक चीज़ें हमने तुमको दी हैं उनमें से खाओ और उसमें ज़्यादती न करो वरना तुमपर मेरा ग़ुस्सा उतरेगा, और जिसपर मेरा ग़ुस्सा उतरता है, वह ऊपर से नीचे आ रहता है।"
>
> (क़ुरआन, 20 : 81)

लेकिन बनी-इसराईल ने ख़ुदा की नाफ़रमानी की और ज़मीन में फ़साद फैलाया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी हुकूमत उनसे छिन गई और उनके दुश्मन उनपर ग़ालिब (प्रभावी) हो गए। एक मुद्दत के बाद अल्लाह ने उनपर एहसान किया। न सिर्फ़ यह कि उन्हें उनके दुश्मनों पर ग़लबा अता किया, बल्कि उनके माल और औलाद में बरकत दी और उनकी अफ़रादी (इनसानी) क़ुव्वत में इज़ाफ़ा किया। उनको हिदायत की गई कि वे शुक्र का रवैया अपनाएँ, नेमतों की नाशुक्री न करें। इसमें किसी दूसरे का नहीं, ख़ुद उन्हीं का फ़ायदा है–

"फिर हमने बारी लौटा दी और तुम्हें उनपर ग़लबा अता किया और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हारी तादाद को बढ़ाया। अगर तुमने भलाई की तो अपने लिए भलाई की, और बुराई की तो अपने लिए की।" (क़ुरआन, 17 : 6-7)

उन्होंने इस नसीहत को भुला दिया और नाशुक्री और नाफ़रमानी न छोड़ी। इसलिए उनके दुश्मन उनपर दोबारा ग़ालिब आ गए। उनकी मुक़द्दस (पाक) जगहों को तबाह व बर्बाद करके रख दिया और वे हर तरह से ज़लील व रुस्वा हुए। इसपर उनसे कहा गया –

"हो सकता है कि तुम्हारा रब तुमपर रहम करे। लेकिन अगर तुम वही करोगे जो पहले किया था तो हम भी वही करेंगे जो इससे पहले कर चुके हैं।" (क़ुरआन, 17 : 8)

यही बात सूरा-14 इबराहीम में इस तरह कही गई है–

"और याद करो उस वक़्त को जबकि तुम्हारे रब ने यह एलान किया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो जो मैंने दिया है, ज़रूर तुम्हें उससे भी ज़्यादा दूँगा। लेकिन अगर तुम नाशुक्री करोगे तो समझ लो कि मेरा अज़ाब भी बहुत सख़्त है।"

(क़ुरआन, 14 : 7)

बनी-इसराईल ने जब अल्लाह तआला की हर छोटी-बड़ी नेमत की नाक़द्री की और अपनी कथनी-करनी से साबित कर दिया कि वह शुक्रगुज़ार क़ौम बनना नहीं चाहती तो वे सारी नेमतें एक-एक करके उनसे छीन ली गईं जो उन्हें दी गई थीं। हक़ीक़त यह है कि कोई भी नाशुक्री क़ौम किसी दूसरे का नहीं बल्कि ख़ुद अपना ही नुक़सान करती है। इसी वजह से क़ुरआन मजीद ने कहा–

"उन्होंने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया, बल्कि वे अपने ही ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे।" (क़ुरआन, 2 : 57)

इसकी एक और मिसाल क़ौमे-सबा की है। अल्लाह तआला ने इस क़ौम को बड़ी माद्दी (भौतिक) तरक़्क़ी और ख़ुशहाली अता की थी। उन्होंने

बड़े-बड़े बन्द बाँधकर अरब के रेगिस्तान को हरा-भरा और शादाब (सेराब) बना दिया था। उनकी आबादी के दोनों तरफ़ लगातार दूर-दूर तक हरे-भरे बाग़ात फैले हुए थे। इसी के साथ शाम (सीरिया) तक उनकी तिजारत का सिलसिला जारी था। रास्ते की आबादियों से उनके ताल्लुक़ात बड़े अच्छे थे, इसलिए सफ़र में कोई डर-ख़ौफ़ नहीं होता था और पूरे इतमीनान से वे तिजारती फ़ायदे हासिल कर रहे थे। लेकिन इस ख़ुशहाली ने उन्हें ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दिया और वे यह भूल गए कि उन नेमतों पर उन्हें ख़ुदा का शुक्र अदा करना चाहिए और उसका फ़रमाँबरदार बनकर रहना चाहिए। नसीहत करनेवाले ने उन्हें नसीहत की—

> "अपने रब की दी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र अदा करो। पाकीज़ा (पाक) शहर है और माफ़ करनेवाला रब।"
>
> (क़ुरआन, 34 : 15)

लेकिन उन्होंने इस नसीहत और ख़ैरख़ाही को मानने से इनकार कर दिया और अपने ऐशो-आराम में डूबे रहे। नतीजा यह हुआ कि ज़राअत (खेती-बाड़ी) की तरक़्क़ी के लिए उन्होंने जो बन्द बाँधे थे वे सैलाब से टूट गए और वे मआशी लिहाज़ (आर्थिक रूप) से बर्बाद हो गए। उनकी यह तबाही क़िस्मत या इत्तिफ़ाक़ से नहीं थी, बल्कि ख़ुदा की नाफ़रमानी और उसकी नेमतों की नाशुक्री का नतीजा थी। इसी वजह से क़ुरआन कहता है—

> "यह हमने उनको उनकी नाशुक्री का बदला दिया, और हम इस तरह का बदला उसी को देते हैं जो नाशुक्रा हो।"
>
> (क़ुरआन, 34 : 17)

इसके बाद फ़रमाया—

> "बेशक इसमें उस शख़्स के लिए (सीख की) निशानियाँ हैं जो सब्र करने और शुक्र करनेवाला है।" (क़ुरआन, 34 : 19)

यह वाक़िआ इस बात का सुबूत है कि सब्र व शुक्र का रास्ता ही

कामयाबी का रास्ता है। जब इनसान तकलीफ़ पर रोना-पीटना और ऐशो-आराम पर नाशुक्री का रवैया अपनाता है तो यहीं से उसकी नाकामी की शुरुआत हो जाती है।

क़ुरआन की सूरा-89 फ़ज्र में कुछ ऐसी क़ौमों का ज़िक्र किया गया है जो अपने वक़्त की बहुत विकसित क़ौमें थीं और माद्दी (भौतिक) लिहाज़ से बुलन्दी को पहुँची हुई थीं, लेकिन उनकी माद्दी सरबुलन्दी उनको ख़ुदा के अज़ाब से न बचा सकी।

इसके बाद मक्का के दौलत के पुजारियों और मालदारों से ख़िताब करके कहा गया–

> "हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम (अनाथ) की इज़्ज़त नहीं करते हो और मुहताज को खाना खिलाने पर नहीं उभारते हो, और मीरास का सारा माल खा जाते हो, और माल से बुरी तरह मुहब्बत करते हो।" (क़ुरआन, 89 : 17-20)

इसमें इस बात की तरफ़ इशारा है कि उन क़ौमों की तबाही की एक वजह यह भी रही है कि उन्होंने यतीमों, ग़रीबों और मुहताजों के हक़्क़ों को नहीं पहचाना, माल की मुहब्बत में उन ज़िम्मेदारियों को भूल गए जो लागू होती थीं और सारी अख़लाक़ी हदों को फाँदकर माल जमा करना शुरू कर दिया। अब तुम भी उन्हीं के नक़्शे-क़दम पर चल रहे हो। इसलिए क़ुदरत के क़ानून के मुताबिक़ तुम भी उसी अंजाम से दोचार होगे जिससे पिछली क़ौमें दोचार हुई थीं।

—o—